

भा.कृ.अनु.सं. के अट्ठावनवें दीक्षांत समारोह (13 फरवरी, 2020) जारी की जाने हेतु प्रैस विज्ञप्ति

भा.कृ.अनु.सं. का अट्ठावनवां दीक्षांत समारोह दिनांक 14 फरवरी, 2020 को आयोजित किया जाएगा। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री वेंकैया नायडू जी, दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी; राज्य मंत्री, कृषि और किसान कल्याण, श्री कैलाश चौधरी तथा सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., डॉ त्रिलोचन महापात्र जी भी समारोह को अलंकृत करेंगे।

वर्ष 1958 में एक मानक विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त होने के बाद अब तक भा.कृ.अनु.सं. के स्नातकोत्तर विद्यालय ने 10,005 छात्रों (4148 एम.एससी., 69 एम.टेक. और 4885 पी.एच. डी.) को उपाधियाँ प्रदान की है, जिसमें 14 अन्य देशों के 399 छात्र भी शामिल हैं। 58 वें दीक्षांत समारोह में विदेशी छात्रों सहित 245 छात्र अपनी उपाधियाँ प्राप्त करेंगे। दीक्षांत समारोह के दौरान, अपनी उपाधियों के अतिरिक्त एमएससी और पीएचडी छात्रों के लिए 5 मेरिट मेडल और 1 सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त उत्कृष्ट वैज्ञानिकों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का सुकुमार बसु मेमोरियल पुरस्कार; श्री हरिकृष्ण शास्त्री मेमोरियल पुरस्कार; सर्वश्रेष्ठ प्रसार वैज्ञानिक पुरस्कार और डॉ ए.बी. जोशी मेमोरियल पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

भा.कृ.अनु.सं., अनेक जैविक और अजैविक तनावों के विरुद्ध प्रतिरोधी क्षमतायुक्त और अधिक पोषण गुणवत्ता सहित उच्च उपज वाली फसल किस्मों/संकरों को विकसित करने में सर्वोत्कृष्ट संस्थान रहा है। पूसा किस्मों की बढ़ती प्रजनक बीज की मांग, किसानों के बीच उनकी बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है।

भा.कृ.अनु.सं. द्वारा विकसित बासमती चावल की किस्में जैसे पूसा बासमती 1121, पूसा बासमती 1509 और अन्य बासमती की उन्नत किस्में जैसे पूसा बासमती 1718, पूसा बासमती 1637 इत्यादि देश के लगभग 1.5 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती हैं और वर्ष 2018-19 के दौरान इससे रु. 32800 करोड़ की विदेशी मुद्रा अर्जित करने में मदद की है। भा.कृ.अनु.सं. द्वारा जारी की गई गेहूं की किस्मों एचडी 2967, एचडी 3086 और अन्य किस्मों ने कुल मिलाकर देश के कुल गेहूं उत्पादन में लगभग 60 प्रतिशत का योगदान दिया है जिससे रुपये 81000 करोड़ की कुल आय प्राप्त हुई है।

दीक्षांत समारोह के दौरान बेहतर पोषण और अधिक उपज एवं आय के लिए सब्जियों की 11 किस्में/संकर जारी की जाएंगी। फलों की फसलों(आम की दो, प्यूमेलो और अंगूर में एक-एक) की भी चार (4) नई किस्में जारी की जाएंगी। पूसा अचार खीरा-8 (डी.जी.-8) कम लागत वाले पॉली-हाउस के तहत सर्दियों के मौसम (ऑफ-सीज़न: नवंबर-मार्च) के दौरान 80-85 टन/हेक्टेयर (800-850 / 100 वर्गमीटर) की उपज प्रदान करेगा। ग्रीष्मकालीन स्ववैश के पूसा श्रेयश (डीएस-17) पॉली-हाउस के तहत सर्दियों के मौसम में 20.0-22.0 टन/हेक्टेयर उपज प्रदान करेगा। पूसा स्नोबॉल संकर-2 (केटीएच-डीएच-1) एफ1 संकर पर आधारित पहला दोगुना अगुणित है। पारंपरिक रूप से प्रतिबंधित एफ1 संकर की तुलना में इसमें अधिक एकरूपता है

पूसा पर्पल फूलगोभी-1 (केटीपीसीएफ-1) में तीव्र बैंगनी रंग होता है और गहरी रंजकता दही के नीचे के खुरों के अंदर होती है। कुल खाद्य भाग में औसत एंथोसाइनिन सांद्रण 43.7मिली ग्राम / 100 ग्राम है। औसत विक्रेय दही का वजन 0.76 किलोग्राम है।

टमाटर की किस्म पूसा रक्षित (डीटीपीएच-60) संरक्षित खेती के लिए भा.कृ.अनु.सं. की पहली F1 संकर है। औसत फल उपज/पौधा 15 किग्रा/वर्गमीटर है। पके हुए लाल फलों में टीएसएस 5.1^o ब्रिक्स और लाइकोपीन की मात्रा 6.0 मिली ग्राम / 100 ग्राम होती है। पालक की किस्म पूसा विलायती अवधि में कम है और 12 टन / हेक्टेयर की उपज के साथ दो कटिंग देती है। इसमें उच्च एस्कॉर्बिक एसिड, लोहा और कैल्शियम (क्रमशः 65, 8 और 186 मिलीग्राम/100 ग्राम) शामिल हैं। खरबूजे की पूसा सुनेहेरी किस्म सरदा तरबूज की पहली नारंगी मांसल किस्म है और यह संरक्षित खेती के लिए उपयुक्त रहेगी। बाजार में अधिक मांग और कम आपूर्ति की स्थिति में फूलगोभी की पूसा संकर-3 (DCH 976) किसानों को आय बढ़ाने में मदद करेगी। दिल्ली की परिस्थितियों में इसकी कटाई दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में करके 37-39 टन / हेक्टेयर की उपज प्राप्त की जा सकती है।

आम की पूसा मनोहरि, आम्रपाली x लाल सुंदरी की (संकर 8-11) नियमित उपज वाली एक संकर है, जो आम की विकृति (10-15%) के प्रति सहिष्णु है। पूसा दीपशिखा (संकर 11-2) आम्रपाली x सेंसेशन की संकर है जिसमें उपज की नियमितता है। पूसा बीजरहित प्यूमेलो -1 भारत का पहला बीज रहित सफेद मांसल प्यूमेलो उत्परिवर्ति (म्यूटेंट) है जिसमें उच्च रस प्राप्ति (41.13%) है। अंगूर संकर पूसा पर्पल बीजरहित को भ्रूण के बचाव के माध्यम से निर्मित किया गया है, यह उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में अतिशीघ्र बेरी पकने की एक किस्म (75-80 DAFB) है।

नवोन्मेषी युग को बढ़ावा देने हेतु एक कृषि नवाचार केंद्र की स्थापना की जा रही है। इसका नींव का पत्थर भारत के प्रधान मंत्री के प्रधान सचिव डॉ पी.के. मिश्रा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल 2019 को रखा गया। नव जीन की खोज , डिजाइनर फसलों के विकास, प्राकृतिक अणुओं के बायोप्रोस्पेक्टिंग करके पौधों के संरक्षण रसायनों, जैव रसायन और पोषक तत्वों के रूप में उपयोग करने हेतु, किसानों द्वारा नवोन्मेषी तकनीकों की मान्यता और अत्याधुनिक विज्ञान में मानव संसाधन विकास हेतु यह एक बहु-विषयक केंद्र होगा।

एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS) मॉडल किसानों की आय बढ़ाने में मददगार हो सकता है। भा.कृ.अनु.सं. के मॉडल ने 628 दिनों के मानव रोजगार सृजन के साथ ही रु. 3,78,784 / हेक्टेयर / वर्ष की शुद्ध आय हासिल करने में मदद की है।

भा.कृ.अनु.सं. द्वारा अंतरराष्ट्रीय उपग्रहों से ली गई छवियों का उपयोग करके तीन प्रदेशों पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में पराली जलाने की वास्तविक समय निगरानी की गई थी। विश्लेषण के आधार पर दैनिक बुलेटिन जारी किया गया, जिसका उपयोग कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय और राज्य विभागों द्वारा, चावल के अवशेषों के इन-सीटू प्रबंधन पर "केंद्रीय क्षेत्र योजना" की सफलता का मूल्यांकन करने के लिए किया गया था। विश्लेषण में स्पष्ट रूप से तीन राज्यों में धान की पराली को जलाने में वर्ष 2018 की तुलना में वर्ष 2019 में 18.8% की गिरावट आई है।

फसल अवशेषों को जलाने के खतरे को देखते हुए, भा.कृ.अनु.सं. ने तेजी से खराब होने वाले धान के पुआल और विभिन्न कृषि-वनस्पति-कचरा प्रबंधन के लिए पूसा डीकम्पोजर विकसित किया है। इस तकनीक का लाइसेंस 7 कंपनियों को दिया गया है।

संस्थान ने कुल 1150.2 टन बीजों की आपूर्ति की है, जिसमें न्यूक्लियस, ब्रीडर एवं 12 क्षेत्रों की 100 से अधिक किस्मों के शुद्ध बीज और विभिन्न राज्यों की 25 सब्जियों की फसलें शामिल हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि गेहूं, चावल और सरसों के क्षेत्र में, देश के कुल प्रजनक बीज उत्पादन में भा.कृ.अनु.सं. किस्मों का योगदान 33% से अधिक है।